बस्तर में गोंड़ जनजातियों में धर्म और उनके बदलते प्रतिमान

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

बस्तर में गोंड़ जनजातियों में धर्म और उनके बदलते प्रतिमान

कृपाराम ध्रुव
सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र
भानुप्रतापदेव शासकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर
(छ.ग.)

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल-9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

बस्तर में गोंड़ जनजातियों में धर्म और उनके बदलते प्रतिमान

संस्करण : 2019
© लेखक
ISBN: 978-93-88998-17-8

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा वी.एम. ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

प्राक्कथन

भारतीय संविधान ने जनजातियों को एक विशिष्ट समुदाय के रूप में मान्यता दी है और धर्म के मामले में उसमें यह स्वतंत्रता दे रखी है कि जो जिस धर्म का अनुशरण करना चाहें करें। व्यवहार में जैसा कि जनगणना के आकड़ों से पता चलता है कि आदिवासियों की अपनी धार्मिक पहचान नहीं के बराबर है, वे धार्मिक पहचान दर्ज कराने के लिए कोई निश्चित जगह न पा कर, जनजातियों को अन्य धार्मिक समुदाय के साथ जुड़ने के लिये बाध्य होना पड़ता है। परिणामतः जनजाति के धार्मिक आस्था-विश्वासों में समानता होने पर भी हर समुदाय अपने धार्मिक पहचान अपने-अपने हिसाब से अलग-अलग बताने के लिए विवश है। हमारा मानना है कि भारत का 8 प्रतिशत आदिवासियों की जनसंख्या हिन्दू के रूप में कर दी गई है जो कि सही नहीं है। जनजाति का प्राकृतिक धर्म जैसे सरना, गोंड़ी या आदिम धर्म से संबोधित किया जाता रहा है। जनजातियों में विश्वास रहा कि वे प्राकृतिक शक्तियों का प्राचीन काल से ही उपासक रहे हैं।

धार्मिक आस्थाऐं आदिवासियों में जीवन के प्रति आत्मविश्वास जगाती हैं। जनजातियों के अंदर सुशुप्त आत्मविश्वास को जगाने के लिए प्रस्तुत पुस्तक में कुछ तथ्य उजागर किये गए हैं, जिसके आधार पर यह प्रमाणित करने का प्रयास किया गया है कि जनजातियों की धार्मिक आस्थाओं को जनजाति धर्म के अंतर्गत सम्मिलित किया जा सकता है और यही राष्ट्रीय स्तर पर जनजातियों की सही पहचान होगी।

भारतीय जनजातियों में सर्वाधिक जनसंख्या 2001 के अनुसार गोंड़ जनजाति की है, जिनकी जनसंख्या 65 लाख से अधिक रही। यह जनजाति आज भी दुर्गम क्षेत्रों में संसार के आधुनिक सभ्यता से दूर रहकर अपनी धार्मिक, सामाजिक दृष्टि से पहचान बनायें हुए है और अपनी उत्पत्ति के संदर्भ में प्रमाणित ग्रंथों को स्वीकार नहीं करते, वे मानते है कि अपनी उत्पत्ति ''बुढ़ादेव'' से हुई है।

गोंड़ जनजाति के अनेक उपभाग है यथा राजगोंड़, धुरगोंड़, अगरिया, प्रधान इत्यादि। बस्तर में निवास करने वाली प्रमुख जनजातियाँ मुरिया, माड़िया, अबुझमाड़िया का नाम भौगोलिक स्थिति 'बिहड़ों' दुर्गम अथवा 'माड़' में निवास करने से अलग-अलग नामों से राजतंत्र या, ब्रिटिषकाल में संबोधित किया गया था, जो कि गोंड़ जनजाति

के धार्मिक पहलू व उनके देवी-देवताओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि मुरिया, माड़िया, दोरला, धुरवा की देवी-देवताओं का उद्‌गम विकास की प्रायः मान्यता अबूझमाड़ क्षेत्र से बनी है। अतः विभिन्न क्षेत्रों में निवास करने वाले जनजाति, गोंड़ जनजाति ही कहा जा सकता है।

गोंड़ जनजाति की धार्मिक एवं उनके बदलते प्रतिमान के अध्ययन द्वारा धर्म के आधार पर उनकी सामाजिक, धार्मिक तथ्यों के अंतःसंबंधों को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। जिससे धर्म के साथ उनके सामाजिक-आर्थिक तथ्यों के विश्लेषण से यह पाया गया कि उनके सामाजिक-आर्थिक जीवन सरल एवं सामूहिकता पर निर्भर है अतः उनकी सामूहिकता ही उनकी आर्थिक पिछड़ापन का कारण हो सकता है। इनकी सामाजिक व्यवस्था धर्म व संस्कृति, प्राचीन समय से गोत्र व्यवस्था के आधार पर रहा। गोत्र नियमों व निषेधों को पालन कर अपने आध्यात्मिक भूम (पेनकड़ा) के महत्व के आधार पर बनी थी। अतः देवी-देवताओं के आदर्शों से गोत्र समूह द्वारा लोगों को नियंत्रण 'दैवी शक्तियाँ' मानकर लोग पालन करते थे। मानव व्यवहार को नियंत्रित करने में प्राचीन काल से सामाजिक नियमों को लोग अचेतन रूप से पालन करते थे, लेकिन विभिन्न धर्मों के सम्पर्क होने के कारण जनजाति मान्यताओं में लोगों की आत्मविश्वास में कमी होने लगी, अतः समय के अनुसार लोगों के विचारों में परिवर्तन होते रहे हैं।

इस परिवर्तनशील जनजातियों के कारकों एवं मान्यताओं का विस्तृत अध्ययन करने का यह पुस्तक एक शोधगर्भीत प्रयास है।

डॉ. कृपाराम ध्रुव
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र
भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, कांकेर (छ.ग.)

आभार

धार्मिक अवस्थाओं मानव आत्म विश्वास जगाती है। प्राचीन एवं सनातन हिन्दू धर्म की परिधि में जैन, बौद्ध, वैष्णव, शैव, शाक्त तथा मध्यकालीन एवं आधुनिक धार्मिक आदोलनों को समाहित माना जाता है, इन सभी सम्प्रदायों के अंगीकृत स्वरूप ने हिन्दू धर्म को वृहद एवं व्यापक बनाया है। वहीं छत्तीसगढ़ के बस्तर अंचल में निवासरत गोंड़ जनजाति का धर्म अपने प्राचीनत्तम मान्यताओं, विश्वासों एवं विविध देवी-देवताओं के समुच्चय से निर्मित है, जिसका विवेचन एवं विश्लेषण "गोंड़ जनजातियों में धर्म और उनके बदलते प्रतिमान" के रूप में करना सरल ही नहीं अपितु अध्ययन क्षेत्र के लोगों तक पहुंच पाना समसामिक समय में चुनौतीपूर्ण कार्य है, प्रस्तुत कार्य को पूर्ण करने में शोध निर्देशक डॉ. ए.पी. श्रीवास्तव सेवा निवृत्त अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग शासकीय छत्तीसगढ़, महाविद्यालय रायपुर के सतत् मार्गदर्शन के बिना पूरा करना सम्भव नहीं था समाजशास्त्र अध्ययन शाला के डॉ. प्रमोद शर्मा पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर के सह-निर्देशक के प्रोत्साहन एवं निर्देशन ने मुझे इस कार्य को करने के लिए प्रेरित किया। निर्देशक द्वैय के सानिध्य एवं मार्गदर्शन से इस शोध कार्य को पूरा कर सका, मैं इन दोनों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हुए सदैव आशीर्वाद का आकांक्षी रहूंगा।

समाजशास्त्र अध्ययनशाला के वरिष्ठ व्याख्यातागत डॉ. जे.एल. तिवारी, डॉ. एन. कुजुर, डॉ. एल.एस. गजपाल तथा डॉ. (सुश्री) हेमलता बोरकर के प्रति अर्न्तमन से आभार प्रकट करता हूँ जिसका सहयोग व मार्गदर्शन समय- समय पर मिलता रहा है। डॉ. के.आर. मण्डावी प्राध्यापक (इतिहास) का बहुमूल्य सहयोग एवं सुझाव के लिए आजीवन ऋणी रहूंगा तथा डॉ. श्रीमति बंसत नाग (सहायक प्राध्यापक) श्री शरद ठाकुर (सहायक प्राध्यापक) भानुप्रतापदेव शासकीय महाविद्यालय कांकेर के सहयोग एवं सुझाव के प्रति भी आभारी रहूंगा। मैं अपने पूज्य पिताजी एवं माता जी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिन्होनें मुझे हर पल अनवरत चलने की प्रेरणा थी। जीवन संगिनी सरिता ध्रुव एवं पुत्र- पुत्री प्रति कृतज्ञ हूँ जिसका स्नेह कार्य की कठिनाईयों को दूर करते चली गयी।

भानुपप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर के ग्रंथपाल श्री पी. के. श्रीवास्तव तथा सहायक ग्रंथपाल श्रीमती ललिता शर्मा के प्रति भी आभारी व्यक्त

SAMPLE

करता हूँ, जिन्होंने पास सामग्री उपलब्ध कराकर सहयोग प्रदान लिये।

तथ्य के संकलन के दौरान मिले सहायोग के लिए मैं श्री दीनदयाल शोरी (शिक्षक) बेनूर, श्री धनसिंह बघेल (शिक्षक) नारायणपुर, श्री कृष्ण कुमार गोटा (शिक्षक) सिंघोडी तराई एवं श्री रैनू राम कुमेटी (सरपंच) महका, श्री देवनाथ उसेण्डी (बिजली) का भी आभारी हूँ, जिन्होंने अमूल्य समय देकर गोंड़ी बोली के उत्तरदाताओं से हिन्दी में अनुवाद करने में सहयोग किया तथा श्री पुष्कर ठाकुर (सहायक ग्रामीण विकास विस्तार अधिकारी) जिन्होनें कोहकामेटा (अबुझमाड़) के क्षेत्र के उत्तरदाताओं तक पहुंचाने में सतत् सहयोग किया उनके प्रति भी मैं कृतज्ञ व्यक्त करता हूँ।

देव कम्प्यूटर्स के संचालक श्री बलवंत सिंह चन्देल के प्रति भी आभारी हूँ, जिन्होंने शोध प्रबंध का टंकण कार्य किया हुआ। अंत मैं उन सभी स्नेहजन जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग किया उनके प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिनके सहयोग, प्रेरणा, सद्भावना के कारण अपने शोध प्रबंध को पूर्ण कर सका।

कृपाराम ध्रुव
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
भानुप्रतादेव, शासकीय स्नातकोत्तर (महाविद्यालय) कांकेर (छ.ग.)

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन *v*

आभार *vii*

तालिका-सूची *xiii*

आरेख-सूची *xvii*

अध्याय - प्रथम : - विषय प्रवेश **1**

- अध्ययन क्षेत्र का परिचय
- जनजाति परिचय
- गोंड़ जनजाति परिचय
- अध्ययन का समाजशास्त्रीय महत्व शोध साहित्य का पुनरावलोकन
- अध्ययन का उद्देश्य
- शोध प्राकल्पना
- अध्ययन पद्धति

(1) अध्ययन क्षेत्र

(2) उत्तरदाताओं का चयन

(3) तथ्यों का संकलन

(4) तथ्य प्रस्तुतीकरण

अध्याय - द्वितीय : - गोंड़ जनजाति का सामाजिक संरचना व्यक्तिगत विवरण **36**

- लिंग, आयु, गोत्र, शिक्षा, वैवाहिक स्थिति, व्यवसाय, मासिक आय
- पारिवारिक विवरण : -

पारिवारिक सदस्यों की आयु, लिंग, शिक्षा,
वैवाहिक स्थिति शिक्षा और महिलाओं की शिक्षा

SAMPLE

अध्याय - तृतीय : - गोंड़ जनजातियों की आर्थिक संरचना **57**

- आखेट- उद्देश्य, धार्मिक क्रिया- कलाप एवं आखेट की देवी- देवता
- पशु पालन, कृषि एवं वनोपज और उनके देवी- देवता

अध्याय - चतुर्थ : - जनजाति संस्कृति एवं कला **74**

- संस्कृति की अवधारणा, जनजाति संस्कृति
- संस्कार, जन्म संस्कार, विवाह संस्कार, विवाह का स्वरूप जीवन साथी का चयन, विधवा विवाह, दहेज प्रथा
- मृत्यु संस्कार - मृतक स्मारक,
- जनजातीय कला - प्रस्तर कला, काष्ठ कला, चित्रकला, मूर्ति कला, मृतिक कला धातुशिल्प, लौह शिल्प
- नृत्य, संगीत एवं वाद्य

अध्याय - पंचम : - गोंड़ जनजाति के धार्मिक संरचना **111**

- धर्म की अवधारणा एवं सिद्धांत
- जनजाति धर्म एवं उनके प्रमुख देवी-देवता सिरहा, गायता व पुजारी एवं सिरहा की समाधि
- उपासना पद्धति
- अभिचारिक क्रियाएं
- जनजाति पर्व उत्सव मड़ाई जात्रा
- गोंड़ जनजाति के धार्मिक संरचना का अध्ययन
- जनजाति धर्म का मूल आधार, उत्पत्ति के स्रोत
- नैतिक नियमों की मान्यता
- गोत्र व वंश देवी-देवता
- गोत्र का प्रतीक ही अलौकिक शक्ति
- गोत्र भूम या परगना देवी-देवता
- ग्राम देवी-देवता
- पारिवारिक देवी-देवता
- उपासना पद्धति
- धार्मिक निषेध
- देव उत्सव मड़ाई, जात्रा

नमूना SAMPLE

- लिंगों देव की धार्मिक शिक्षा, नृत्य, संगीत एवं वाद्य

अध्याय - षष्टम : - गोंड़ जनजाति का धर्म और उनके बदलते प्रतिमान **251**

- बस्तर के गोंड़ जनजाति की धार्मिक मान्यताओं की बदलता स्वरूप
- धार्मिक मान्यताओं में बदलाव
- गोत्र व वंश देवी-देवताओं के मान्यता में बदलाव
- ग्राम्य व पारिवारिक देवी-देवताओं का बदलता स्वरूप
- पूजा पद्धति में बदलाव
- धार्मिक निषेधों पर परिवर्तन
- अपवित्र शक्तियों के शुद्धिकरण संबंधी बदलाव
- धर्म के मार्गदर्शकों में परिवर्तन
- देवी-देवताओं के पूजा के अवसर पर संगीत, वाद्य एवं नृत्य में परिवर्तन

अध्याय - सप्तम : - निष्कर्ष **300**

- गोंड़ जनजाति के धार्मिक आदर्श
- जनजाति धर्म के संरक्षण एवं सुझाव

संदर्भ-ग्रंथ सूची ***332***

साक्षात्कार - अनुसूची ***339***

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

तालिका- सूची

तालिका क्र.	विवरण
2.1	उत्तरदाताओं का लिंग
2.2	आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण
2.3	गोंड़ जनजाति के गोत्र का वर्गीकरण
2.4	उत्तरदाताओं का शैक्षणिक स्तर
2.5	उत्तरदाताओं का वैवाहिक स्थिति
2.6	उत्तरदाताओं का व्यवसाय
2.7	उत्तरदाताओं का मासिक आय
2.8	पारिवारिक सदस्यों की लिंग संरचना
2.9	पारिवारिक सदस्यों की आयु संरचना
2.10	पारिवारिक सदस्यों की शिक्षा का स्तर
2.11	पारिवारिक सदस्यों की वैवाहिक स्थिति
2.12	पारिवारिक सदस्यों की नातीदारी व्यवस्था
2.13	उत्तरदाताओं के परिवार में दहेज प्रथा
2.14	परिवार में वधू मूल्य प्रथा
2.15	परिवार में लड़कियों की शिक्षा
2.16	बच्चों को शिक्षा दिलाने में आर्थिक स्वरूप
2.17	परिवार में पारिवारिक सदस्यों के बीच संबंध
2.18	पारिवारिक सदस्यों के बीच संबंध
3.1	आखेट या शिकार करने वाले उत्तरदाता
3.2	आखेट का उद्देश्य
3.3	आखेट के पूर्व देवी-देवताओं का स्मरण
3.4	पशु पालन करने वाले उत्तरदाता
3.5	यदि तो कौन-कौन से पशुओं को पालते हैं
3.5	दुधारी पशु पालन करने वाले उत्तरदाता

SAMPLE

3.7 उत्तरदाताओं का परम्परागत व्यवसाय
3.8 परम्परागत व्यवसाय बदलने वाले उत्तरदाता
3.9 कृषि के अतिरिक्त वनोपज संग्रहण
3.10 विभिन्न वनोपज संग्रहण
3.11 वनोपज संग्रहण का उपयोग
3.12 वनोपज संग्रहण में देवी-देवताओं का स्मरण
3.13 विभिन्न देवी-देवताओं का स्मरण
4.1 गोंड़ जनजाति के विभिन्न संस्कार
4.2 बाल संस्कार में उत्तरदाताओं का मत
4.3 परिवार में विवाह का स्वरूप
4.4 बहु विवाह प्रथा
4.5 जीवन-साथी का चयन
4.6 जनजाति समाज में विधवा विवाह
5.1 अध्ययनगत उत्तरदाताओं का धर्म
5.2 जनजातीय धर्म का मूल आधार
5.3 गोंड़ जनजाति के उत्पत्ति का स्रोत
5.4 गोंड़ जनजाति के आदि देव की मान्यता
5.5 जनजाति धर्म में नैतिक नियम या आचरण
5.6 नैतिक नियम क्या है
5.7 नैतिक नियम या आचरण का आधार देवी शक्ति
5.8 नैतिक नियम के देवी-देवता
5.9 देवी-देवताओं के अनुष्ठान का माध्यम
5.10 चौरासी पाठ-पीढ़ा की मान्यता
5.11 लिंगों मुदिया एक पाठ-पीढ़ा
5.12 पारी कुपार लिंगों द्वारा गोत्र विभाजन
5.13 विभिन्न गोत्रों का विभाजन
5.14 गोत्र विभाजन सगादेव के आधार पर
5.15 यदि हाँ तो गोत्र का विभाजन
5.16 गोत्र सगादेव समूह या पेनकड़ा
5.17 गोत्र के प्रतीक एक अलौकिक शक्ति
5.18 गोत्र का प्रतीक की पवित्रता
5.19 जनजाति धर्म में गोत्र का महत्व
5.20 गोत्र के उपगोत्र

SAMPLE

5.21 गोंड़ जनजाति की गोत्र की उत्तपत्ति की पौराणिक कथाएं
5.22 गोत्र के प्रतीक पेड-पौधा, जीव-जन्तु का निषेध
5.23 गोत्र की प्रतीक का निषेध की धारणा
5.24 विभिन्न गोत्र के अलग-अलग देवी-देवता की मान्यता
5.25 गोत्र देवी-देवताओं की स्थान को पेनकड़ा
5.26 गोत्र देवी-देवता की पारिवारिक व्यवस्था
5.27 गोत्र देवी-देवता का प्रतीक
5.28 परगना स्तर में गोत्र की देवी-देवता
5.29 ग्राम्य देवी-देवताओं की मान्यता
5.30 ग्राम्य देवी-देवताओं के मान्य कारण
5.31 देवियों में बत्तीस बहनों की मान्यता
5.32 पारिवारिक देवी-देवताओं की मान्यता
5.33 पारिवारिक देवी-देवताओं की अनुष्ठान
5.34 पारिवारिक देवी-देवताओं की अनुष्ठान की विधि
5.35 देवी-देवताओं के अनुष्ठान का माध्यम
5.36 देव उत्सव मड़ई एवं जातरा
5.37 पूर्वज एवं प्राकृतिक शक्तियां देवी-देवता
5.38 महुआ फूल की बनी शराब की पवित्रता
5.39 महुआ फूल की बनी शराब की पवित्रता के कारण
5.40 शराब के माध्यम से विभिन्न अनुष्ठान
5.41 धार्मिक अनुष्ठान में निषेधों का पालन
5.42 यदि हाँ तो धार्मिक निषेध क्या
5.43 पारी कुपार लिंगों के धार्मिक शिक्षा
5.44 लोकगीत एवं लोकनृत्य धार्मिक कार्य का अंग
5.45 संगीत की उत्पत्ति का आधार देवी-देवता
5.46 लोकगीत एवं लोकनृत्य की गुरू लिंगों देव
5.47 लिंगों देव द्वारा अट्ठारह वाद्य का वादन
5.48 लोकगीत एवं लोकनृत्य का संचालन
5.49 लोकगीत एवं लोकनृत्य के संचालन करने के पूर्व प्रार्थना या पूजा
5.50 लोकनृत्य एवं लोकगीत के पूर्व कौन से देवी-देवताओं की पूजा की जाती है
6.1 वर्तमान एवं बीस वर्ष पूर्व के धर्म
6.2 वर्तमान एवं बीस वर्ष पूर्व धर्म के मूल आधार
6.3 उत्तरदाताओं के मुख्य अराध्य देवी- देवता

SAMPLE

6.4 वर्तमान एवं बीस वर्ष पूर्व पूजा की अवधि
6.5 देवी-देवताओं की पूजा विधान की परम्परा
6.6 देवी-देवताओं की पूजा सम्पन्न कराने की परम्परा
6.7 ग्राम संक्षरक देवी-देवताओं की मान्यता
6.8 देवी-देवताओं को बलि एवं मद्य अर्पित करने की परम्परा
6.9 वर्तमान एवं बीस वर्ष की परम्परा
6.10 जनजाति गोत्र धर्म का अभिन्न अंग
6.11 वर्तमान एवं बीस वर्ष पूर्व परगना देवी-देवता
6.12 धार्मिक क्रिया-कलापों के सम्पादन में विशेष व्यवहार
6.13 निर्धारित पूजा स्थल
5.14 धार्मिक मान्यताओं में निषेध की परम्परा
6.15 अपवित्र शक्तियों को पवित्र करने की परम्परा
6.16 अपवित्र शक्तियां
6.17 अपवित्र शक्तियों से मुक्त होने की परम्परा
6.18 पूजा अनुष्ठान में वाद्य यंत्र का प्रयोग
6.19 देवी-देवताओं के पूजा अराधना के गीत
6.20 अन्य धर्म का अनुसरण
6.21 विभिन्न धर्म एवं हिन्दू धर्म के सम्प्रदाय के अनुयायी
6.22 पूर्व व्यवस्था एवं वर्तमान व्यवस्था में बदलाव
6.23 महिलायें देवी-देवता के पूजा में सम्मिलित
6.24 महिलायें पूजा में सम्मिलित होने वाले देवी-देवता
6.25 धर्म के मार्गदर्शक
6.26 अन्य धर्म को अनुसरण करते है तो
6.27 जनजाति धर्म के संकट

नमूना SAMPLE

आरेख- सूची

तालिका क्र. विवरण

2.2 आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

2.7 उत्तरदाताओं का मासिक आय

2.10 उत्तरदाताओं का पारिवारिक सदस्यों का शिक्षा का स्तर

3.2 आखेट का उद्देश्य

3.7 उत्तरदाताओं का परम्परागत व्यवसाय

3.14 वनोपज संग्रहण में देवी-देवताओं का स्मरण

4.7 उत्तरदाताओं का जीवन-साथी का चयन

5.1 उत्तरदाताओं का धर्म

5.3 गोंड़ जनजाति के उत्पत्ति का स्रोत देवी-देवता

5.6 नैतिक नियम के देवी-देवता

5.15 सगादेवी के आधार पर गोत्र विभाजन

5.19 जनजाति धर्म में गोत्र का महत्व

5.23 गोत्र प्रतीक के निषेध की धारणा

5.31 ग्राम्य देवी- देवताओं के मानने का कारण

5.35 देवी-देवताओं के अनुष्ठान करने की विधियां

5.37 देवी उत्सव, मड़ई एवं जातरा आयोजन

5.43 धार्मिक निषेधों का पालन

5.49 लोकगीत एवं लोकनृत्य का संचालन

5.58 लोकगीत एवं लोकनृत्य के देवी-देवता की पूजा प्रार्थना

6.3 उत्तरदाताओं का मुख्य अराध्य देव

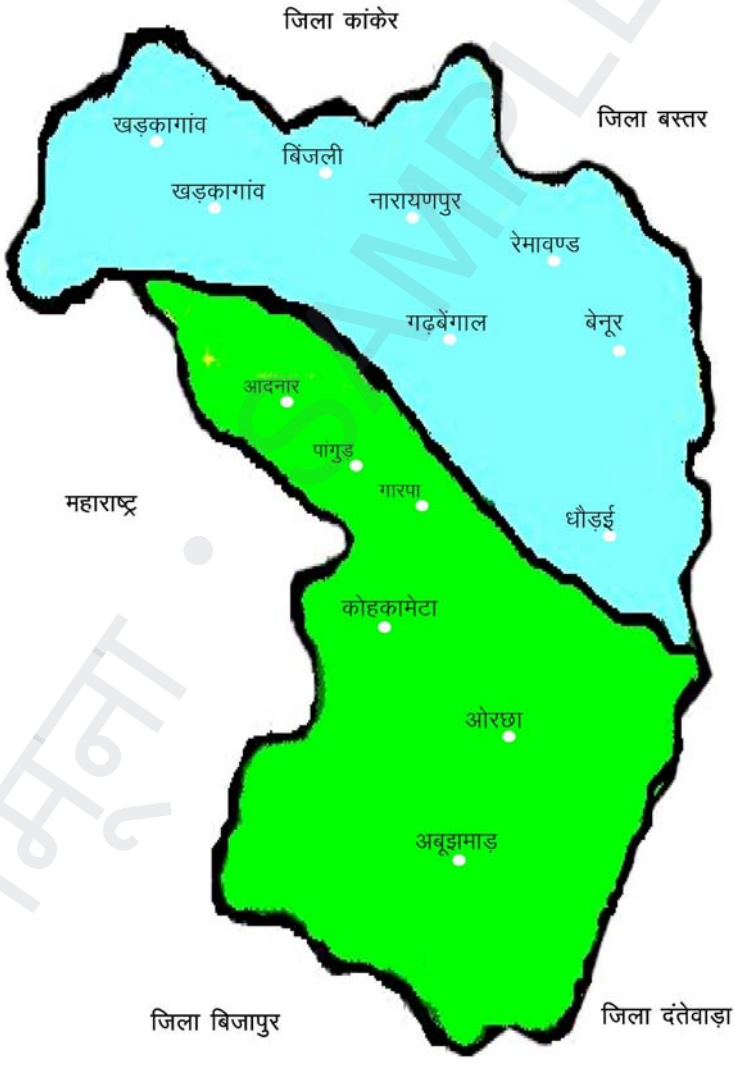
6.13 वर्तमान एवं बीस वर्ष पूर्व पूजा स्थल

6.21 अन्य धर्म एवं हिन्दू धर्म के सम्प्रदाय के अनुयायी

SAMPLE

नमूना • SAMPLE

जिला नारायणपुर का मानचित्र



नमूना SAMPLE



छत्तीसगढ़ का मानचित्र